International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 7, July 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

हिंदी सिनेमा में लोकगीत

डॉ शशि रानी
एसोसिएटप्रोफेसर
डॉभीमरावअम्बेडकरकॉलेज
दिल्लीविश्वविद्यालय

सार

गीत संगीत मानव जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। कला के दूसरे रूपों की तरह इसके लिए रचनात्मक, तकनीकी कौशल और कल्पना की आवश्यकता होती है।जैसे नृत्य रंगों की कलात्मक अभिव्यक्ति है वैसे ही गीत संगीत ध्वनियों की । मन को विकसित करने में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशिष्ट क्षेत्र में जनरूचि के अनुसार प्रयुक्त होने वाले गीतों को लोकगीत कहा जाता है। वैदिक युग से लेकर आज तक लोकगीतों की भावधारा निरंतर बहती चली आ रही है। सभी महान संतो ,साहित्यकारों, लोक कलाकारों ने आम जनता को प्रभावित करने के लिए या अपने मन की दबी हुई भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए लोक कलाओं का सहारा लिया।भावनाओं, ऊर्जा और प्रेम के स्रोतलोकगीतोंनेसिनेमा कीभावभूमि औरशिल्पको लोकजीवनसे सुगन्धितकिया है।

बीज शब्दः लोक साहित्य,लोकगीत,लोक शैली,लोकसंगीत,कजरी,चैती,दादरा,कोरस,रचनात्मकता

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

प्रस्तावना

लोकगीत का लोकसाहित्य में अन्यतम स्थान है। जब मानव भाव विभोर होकर अपने हृदयके उद्गारोंको छन्दबद्ध शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करता हैतोउसेगीतकी संज्ञा दी जाती है।इसी प्रकार डॉ सदाशिव पाड़केने लोकगीतों को लोक मानस के तरंग यित रुप से नि:सृतकाव्यरूप माना है। यह वाणी शास्त्र के नियमों की परवाह किए बिना सामान्य लोक व्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव की आनंद तरंग द्वारा सहज उद्भूत होती है । इस प्रकार आदिमानव के सहजस्वभाविक एवं लयात्मक ढंग से प्रस्फुटित होने वाले आंतरिक आवेग ही लोकगीत का रूप धारण कर लेते हैं ।जनता की गोद में पलकर बड़े होने वाले लोकगीत लोककंठ की मौखिक परंपरा की धरोहर और लोक मानस की विभिन्न चिंताधाराओं के कोष माने गए हैं पंडित रामनरेश त्रिपाठी के अनुसार ," प्रकृति से घनिष्ठ संबंध होने के कारण लोकगीत प्रकृति के महा संगीत का अंश हैं... इनमें अलंकार नहीं केवल रस है! छंद नहीं, केवल लयहै!!लालित्य नहीं, केवल माधुरी है!!! " देवेंद्र सत्यार्थी ने इन्हें कभी ना छीजने वाले रस के सोते कहां है जो कंठ के गाने के लिए और हृदय से आनंद के लिए बने हैं।

लोकगीत अत्यंत सरस और हृदय के सच्चे उद्गार होते हैं क्योंकि ये सभ्यता के आवरण, सुसंस्कृततथासुरम्य प्रभावों से दूर रहने वाले लोगों के अनायासप्रवाहात्मक अभिव्यक्ति होते हैं। लोकगीतों की स्वाभाविकता,अकृत्रिमता और सरलता के विषय में फ्रांसिस गूमर का कथन है,"लोक गाथाओं का महत्व केवलइसीबात में नहीं है कि उनमें अकृत्रिम काव्य भावना उपलब्ध होती है।वे परंपरा की भाषा में ही अपनी अभिव्यक्ति नहीं करते प्रत्युतजनसमूह की वाणी द्वारा प्रकाशन करते हैं । इनमें किसी भी प्रकार की गोपनीयता नहीं पाई जाती । जो वस्तु जैसी है

उसका यथातथ्यरूप में वर्णन करते हैं।वे स्वतंत्रहैंतथा खुली हवा की भांति ताजे हैं।वायु और सूर्य का प्रकाश उनमें खेल करता है।"

लोकगीतों में प्रायः: जीवन का प्रत्येक क्षण मुखरित होता है ।ये सहजता, जीवंतता, आंचलिकता, लय,ताल और स्पर्शसे सराबोर लोकगीत तीज-त्योहार,जन्म-विवाह,विविधसंस्कारों,ऋतु,श्रम संबंधीकार्यकरनेआदि के अवसर पर गाए जाते है।डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय ने समस्त लोकगीतों के संस्कारों की दृष्टि से ,रसानुभूति की प्रणाली से,ऋतु और व्रतों के क्रम से , जातियों के प्रकार से , और श्रम गीत की दृष्टि से पांच प्रकार माने हैं।लोकगीतोंमें हर काल और हर युग को बड़ी सुंदरता से वाणी दी गई है। मनुष्य के सुख-दुख ,प्रेम-बिरह,रीति- रिवाज, चाल -चलन, आचार -विचार, तीज-त्यौहार,धर्म-अनुष्ठान,आस्था-विश्वास,कला- संस्कृति सभी इन लोकगीतों में लोक जीवन की संवेदना के साथ मुखरित होते हैं।

सिनेमा में लोकगीत कीलय,शब्दावली,छन्दोंका प्रयोग करके अनेक गीत लिखे गए हैं।चूंकि लोकगीतों की लयसहज होती है और वे किसी प्रकार की नियम से बंधे नहीं होते इसलिए फिल्मों में इनका कुशलता से उपयोग किया जा सका है। लोकगीत की शैली तीन प्रकार की है।एक, ठेठ लोकगीत जैसे कजली,बिरहा,चैती,लावणी होली आदि। दूसरे वे जो किसी न किसी श्रम से जुड़े हुए हैं और भी समूहगान(कोरस गीत) के रूप में गया जाता है ।रोपनी,जतसार,सोहनी, गोदना आदि। तीसरे वे जिनमें टेक पद्धति का प्रयोग किया जाता है।हिंदी सिनेमा में लगभगसभी अवसरों परगाए जाने वाले,विभिन्नअंचलोंऔर लोक प्रचलित शैलियोंसे संबंधित लोकगीतों का प्रयोग किया गयाहै।

क्षेत्रीयलोकगीत

सिनेमा में भारतीय समाज के लगभग हर प्रदेश के लोकगीतों की ध्वनि सुनाईदेतीहै।मुंशी प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास गोदान पर आधारित गोदान फिल्म में ग्रामीण गीतों को सुनकर मन और आत्मा तृप्त हो जाते हैं।लोक जीवन को अपने में समेटे हुए इसके गीत भोजपुरी लोकगीतों पर आधारित है।इसीप्रकारफिल्म मिशन काभूमरोभूमरो श्याम रंग भूमरो , आए हो किस बगिया से...शादी से पहले मेहंदी के अवसर पर गाया जाने वाला लोकगीत हैजिसमें लड़की से प्यार,मासूमियत और भोलेपन कोदर्शाया गया है।फिल्म हीरो में चार दिनो का प्यार हो...रब्बा बड़ी लंबी जुदाई , फिल्म माचिसमें चप्पा चप्पा चरखा चले...., फिल्म फुकरेका अम्बरसरिया पंजाबी लोकगीत, फिल्म दिल दे चुके सनम में निम्बुडानिम्बुडा , फिल्महम साथ साथ है मेंम्हाराहिवड़ा में नाचे मोर, फिल्म डोर का केसरिया बालमजोराजपूती सैनिकों को समर्पित करने के लिए बनाया गयाराजस्थानी लोक गीत ,फिल्म इंग्लिश विंग्लिश के अंत में आया नवराईमांझी मराठी लोकगीत है।जो शादी के अवसर पर गायाजाता है। इस लोकगीत कोसिनेमा में अनेकबारअलग-अलग रूपों मेंफिल्माया गया है।कॉकटेल,ओएलक्कीलक्कीओए!, तनु वेड्स मनु और हाइवे ऐसी ही फिल्में इस लोकगीत के अंतर्गत बोलोंके माध्यम से किसी कहानी को दिखाया जाता है। छत्तीसगढ़ में प्रचलित ददरिया नामक लोकगीत का प्रयोग फिल्म दिल्ली 6 में हुआहै-

सैंयाछेड़देवेननद चुटकी लेवे ससुराल गेंदा फूल,

सास गारीदेवेदेवर समझालेवेससुराल गेंदा फूल।

फिल्म गेंस ऑफ वासेपुर में भोजपुरी लोकगीतों की छटा देखते ही बनती है-

तार बिजली से पतले हमारे पिया

तार बिजली से पतले हमारे पिया

ओहरीसासु बता तूने यह क्या किया..

सुखके हो गएहैं चुहारीपिया...

प्रेम रस की अभिव्यक्ति से परिपूर्ण फिल्मी गीतों मैं लोकगीतकी बहार का सुंदर चित्रण हुआ है।फिल्म दो बदन कामतजइयोनौकरियांछोड़के,तेरे पैमाने पड़ूंफिल्म बंदिनीका मोरा गोरा रंग लई ले मोहे श्याम रंग दईदे, सेलू मुझे जीने दो का नदी नारे ना जाओ श्याम पैंयापड़ूं, फिल्म बंटी और बबली काकजरारे कजरारे मोरे कारेकारे नैना ऐसे ही गीत । बसंत की खुमारी फिल्म आई झूम के बसंत के पीली पीली सरसों फूली /पीली उड़े पतंग /पीली पीलीउड़ी चुनरिया /पीली पगड़ी के संग में देखी जा सकती है । हिंदी फिल्मों में कहीं – कहीं लोकगीतों में मुखरित सामाजिक और राजनीतिक चेतना का भी प्रयोग हुआ है । फिल्म गुलाल में एरोप्लेन और अंकलसैम की तुकबंदीमें इसे आसानी से देखा जा सकता है।

लोकधुन

लोकगीतों की अपनीधुनें होतीहैं। चाहे वो संस्कार गीत हों,श्रमगीत हों या जातीयगीत। फिल्मों में इनधुनों का बहुत प्रयोग हुआ है ।फिल्म काला पानी का नजर लागी राजा तोरे बंगले पर...।जो मई होती राजा बन की कोयलिया..,कुहूकुरहती राजा तोरे बंगले पर..., फिल्म बंदिनी का मेरे साजन है उस पार , फिल्म सुजाता का सुन मेरे बंधु रे , फिल्म गाइड का वहां कौन है तेरा आदि लोक धुन पर आधारित हैं ।नौशादअली,खेमचंद प्रकाश, गुलाम मोहम्मद, मदन मोहन

ने लोकगीतों की धुनोंका स्तरीय प्रयोग करते हुए अनेक सुरीले गीतोंकी रचना की।फिल्मफरेबी जाल केसांची कहो मोसेबतिया,कहांरहे सारी रतिया से लेकर आज तक अनेक गीत कारों संगीतकारों ने लोकगीत को फिल्म में पहचान दिलाई। फिल्म गंगा जमुना कातोरामन पापी सांवरिया,फिल्म अनपढ़काजियाले गयोरी मेरा सांवरिया , पाकीजा का इन्हीं लोगों ने ले लीन्हा दुपट्टा मोरा,फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी तीसरी कसम पर आधारित फिल्म तीसरी कसम का पान खाए सैयां हमारो,सांवरीसुरतियाहोठलाल लाल ...,चलतमुसाफिर मोह लियो रे पिंजरे वाली मुनिया आदिहजारों गीतकानों में मधुर संगीत धोल जाते हैं।"सचिन देव बर्मन ने लोक संगीत और आधुनिक संगीत के मेल से सुरों की सरिता बहायी । सिनेमा में विभिन्न क्षेत्रों से आए फिल्म संगीतकारोंने अपनी प्रदेश की मिट्टी की खुशबू को अपने-अपने प्रदेश के लोग संगीत के माध्यम से बिखेरा।फिल्मों नेलोक गीतों को व्यापक जनसमूह तक पहुंचाया है।यहां पंजाब का हीरजुगनी दिखता है तो बंगाल का बाउल भी । विमल राय द्वारा निर्देशित देवदास फिल्म मेंआन मिलो आन मिलो श्यामसांवरे ,गीत में इसकी शताब्दी की जा सकती है।फिल्म पीपली लाइव में छत्तीसगढ़ी गाना चोला माटी के हो रामसुंदर लोकगीत है। दक्षिण भारतीय भाषाओं से भी गीतों के मुखड़े लिए गए हैं जैसे फिल्म श्री 420 का मुखड़ा रमैयावस्तावैया को संगीतकार शंकर जयकिशनने तेलुगु से लिया।जनरूचि और क्षेत्र की भिन्नताकेआधार पर संगीत की विविधता फिल्मों में सहज हीपरिलक्षित होती है।

लोक शैली

हिंदी सिनेमा के गीतों में लोकगीत शैली का भी अनूठा प्रयोग हुआ है। लोक जनजीवनऔरजनमानस से सम्पृक्त होकर लोक शैलियों का प्रयोग कर का प्रयोग कर लोक प्रवृत्ति

के अनुकूल गीतों की रचना की गई।ऋतु प्रधान लोक गायन शैली में कजरी,चैता,दादरा का प्रयोग उल्लेखनीय है। लोकगीतों में सबसे अधिक गीत कजली शैली में प्राप्त होते हैं । कजली सावन में स्त्रियों द्वारा गाए जाने वाली हिंदी प्रदेश की अत्यंत प्रचलित गायन शैली है।जोमिर्जापुर, वाराणसी, मथुरा, इलाहाबाद और हरदोई के आसपास मिलती है । कजरी के विषय समकालीन और परंपरागत लोक जीवन पर आधारित होते हैं। परंपरागत रुप से यह शक्तिस्वरूपा मां विंध्यवासिनी के प्रति समर्पित होते हैं तो समकालीन लोकजीवन की झलक भाई बहन के प्यार , नंद भाभी के संबंधों मेंदृष्टिगत होती है।फिल्म विदेशियाके नीकसैंयाबिन भवनवानहीं लागेसखिया ,नैहुलछुटलजाय की कजरी ' ओ रामा रिमझिम बरसेला पानी बेहतरीनलोकगीतहैं। इसमें नवविवाहिताएं मायके के छूट गए रिश्तो की वेदना,परदेस में कमाने गए पति की विरह वेदना,अकेलेपन को व्यक्त करती हैं सखी- सहेलियों के आपसी रिश्तो की खटास मिठास के साथ सावन की मस्ती का रंग इसमें घुला होता है। फिल्म बंदिनीका'अब केबरस भेज भैया को बाबुल,सावन मेंलीजो बुलाया ये/लौटेंगी जब मेरे बचपन की सखियां दीजो संदेशा भिजाएरे, प्रसिद्ध कजरी गीत है। परंपरागत दादरा शैली का प्रयोग नौशाद ने मदर इंडिया में किया।चैतमास पर केंद्रित लोकगीत चैती कहलाता है। इसके विषयप्रेम, प्रकृति और होली रहते हैं। चैत मास श्री राम के जन्म का भी मास है इसलिए इस गीत की हर पंक्ति के बाद अक्सर रामा लगाया जाता है।सिनेमा में होली के अवसर पर गाए जाने वाले लोकगीतों की भरमार मिलती है फिल्म गोदान का होली खेले नंदलालाबिरज में होली खेले नंदलाला,मदर इंडिया का होली आई रे कन्हाई रंग बरसे , शोले का होली के दिन दिल खिल जाते हैं,पिपरा केपतरा सरीखेमोर मनवामेंउठे हैं हिलोर आदि गीतों में गांव की सोंधी सुगंध ताजा हो जाती है।लोकगीतों में प्रेम के साथ विरह का भी अपना अलग रंग है । फिल्म मैने प्यार किया

मेंविरहिनी नायिका कबूतर जा जा जा के माध्यम से नायक को अपनी स्थिति से अवगत कराती है।

कोरस गीत

समूह गीत लोकगीतों की दूसरी विधा है । लोकगीतों में शुरू से ही श्रम और संस्कारों संबंधी जनता ने अपनी कल्पना को तृप्त किया है। लोक जीवन में ढोलक की थाप पर लोकगीत गायन एवं नृत्य की परंपरा रही है जिसमें ध्वन्यर्थक शब्दों का विशेष प्रयोग रहता है क्योंकियेअभियक्ति को बोधगम्य बनाने के साथ ही श्रोता से सीधा संबंध जोड़ देते हैं।राजस्थान के पारंपरिक घूमर नृत्य के सौंदर्य को फिल्म पद्मावत में देखा जा सकता है-

घूमर रमवा ने आप पधारो सा....

आवो जीआवो जी घूमार्दीखेलबा ने...

आज म्हारोजिवडोघनोंहिच्कावे...

ओघबरावे मन मेंभावे....

कोरस

ढोला वालेठाठ

घूमरघूमरघूमर....

इस गीत में राजस्थान की राजपूताना परंपरा और उसकी संस्कृति की झलक देखने को मिलती है

सिनेमा की शुरुआत सेही लोकगीतोंमेंराग भोपाली , भैरवी,पीलू और पहाड़ी का प्रयोग मिलता है । फिल्म नवरंग का अरे जा रे हट नटखट ना छेड़ मेरा घूंघट , पलट के दूंगी आज तोहे गारी ये....गीत राग पहाड़ी पर आधारित है। फिल्म देवदास की बाबुलमोरानेहरछूटाजाए,फिल्म सांझ सवेरा कीअजहूं न आए बालम, स्वामी की,'का करूं सजनी ठुमरी राग भैरवी में निबद्धहैं। फिल्म बहुरानी का बलम अनाड़ी मन भाए रागरागेश्वरी और फिल्म गाइड कामोसे छल किए जाए गीत राग खमाज में निबद्धहै।

निष्कर्ष

वस्तुतः लोकगीत लोक जीवन का मूलाधार है और सिनेमा एकजनमाध्यम, जिसमें लोकजीवन अपने सभी रंगों के साथ अभिव्यक्ति पाता है ।लोकरंग में रचे बसे लोकगीतों के उपयोग से सिनेमा में ताजगी और ठेठलोक जीवन स्तरीय अनुभूतियों का समावेश हुआ है।मैक्सिमगोर्कीने कहा है किलोकसाहित्य लोक द्वारा उत्पन्न कच्चे माल की तरह है।शिष्ट समाजइस कच्चे माल कोही कला के प्रति सजगता और बौद्धिकता के द्वारा शिष्ट साहित्य रूपीपक्के माल का रूप प्रदान करता है।यही बात सिनेमा के संबंध में भी खरी उतरती है।फिल्मी गीतों में प्रयुक्त लोकगीत शैली,लोकधुन,लोक राग और लोक संगीत ने हिंदी सिनेमा को नयी पहचानदेकर प्रखर आयाम प्रदान किया है।

संदर्भ

- सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति अंक-2010
- देवेंद्र सत्यार्थी,धीरे बहो गंगा(आमुख)
- रामनरेश त्रिपाठी, कविता कौमुदी (भाग-3)
- एफबीगूमर, दी पॉपुलरबैलड
- डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन
- श्री कृष्ण दास, लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या
- पुरुषोत्तम कुंदे, साहित्य और सिनेमा
- डॉ शशि शर्मा, प्रगतिशील कविता में लोकतत्त्व
- सी भास्कर राव, हिंदी सिनेमा : एक सफरनामा
- श्याम माथुर,सिने पत्रकारिता